राजस्थान पत्रिका

'सत्य को संदेह के दायरे से मुक्त करना जरूरी'

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

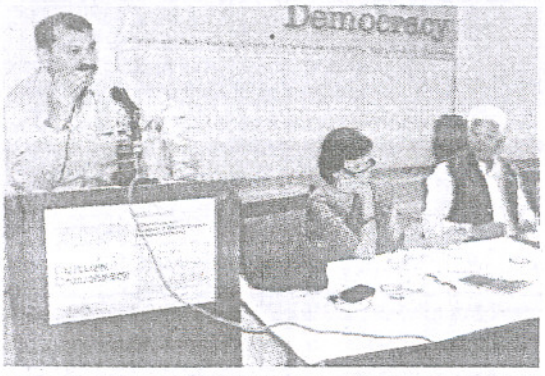

जैसलमेर में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते अतिथि। पत्रिका

जैसलमेर

bureau@patrika.com

गोविंद वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद की ओर से आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी शनिवार को संपन्न हुई। संगोष्ठी के दूसरे दिन सीएसडीएस नई दिल्ली की प्रो. शैल मायाराम ने जाति और धर्म पर चर्चा करते हुए कहा कि देश का गरीब तबका लोकतंत्र की ओर ज्यादा जोर देता है, क्योंकि वहां धर्म, जाति काम नहीं आते हैं। इलाहाबाद से आए अनिल मिश्र ने कहा कि समूचे संसार में समानता व अस्पृश्यता किसी न किसी रूप में दिखाई देती है, लेकिन संस्कृति के जरिए उपेक्षित समुदायों ने हमेशा अपना विरोध जताया है।

जयपुर से आए राजाराम भादू ने कहा कि उपेक्षितों में कुछ समुदाय तो उस स्थिति में हैं, जो अपना विरोध जता लेते हैं, लेकिन कुछ लोग खुद के बारे में कुछ भी सोचने व करने की स्थित में नहीं होते हैं। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. प्रहलाद ने की। प्रदर्शन व राजनीति विषय सत्र में उमाशंकर चौधरी ने सवाल उठाया कि क्या समकालीन दलित साहित्य का दलित राजनीति के निर्माण में योगदान है। अगर है तो सत्य को संदेह के दायरे से मुक्त कर देना होगा। जितेन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि लोकतंत्र में अब वर्चस्व की राजनीति हावी हो रही है, यहां केवल वर्चस्वशाली को ही संस्कृति का दर्जा मिला है। जयपुर से आए प्रेमचंद गांधी ने दलितों व उपेक्षितों के सामाजिक, सांस्कृतिक समाजों पर ठोस प्रयास किए जाने की बात कही। प्रो. शैलमापाराम ने कहा कि संस्कृति के बहिष्करण व समावेशी प्रक्रिया में स्त्री समुदाय दमित होता है। संगोष्ठी में कविता पाठ और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ, जिसमें कवि के रूप में अनिल मिश्रा, आईदानसिंह भाटी, कृष्ण कल्पित, उमा शंकर चौधरी, जितेन्द्र श्रीवास्तव और बद्रीनारायण ने कविताओं का पाठ किया। संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप भार्गव ने धन्यवाद दिया। संचालन प्रो. बद्रीनारायण ने किया। *(कासं)*

'संस्कृति व जनतंत्र' पर संगोष्ठी आज से

जैसलमेर गोविंदवल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद की ओर से 'संस्कृति व जनतंत्र' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 25 व 26 नवंबर को सम रोड स्थित एक निजी होटल में होगा। परियोजना निदेशक ने बताया कि संगोष्ठी में संस्कृति व जनतंत्र, संस्कृति व हाशिये के लोग, समाज व संस्कृति आदि विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। संगोष्ठी में उमाशंकर चौधरी, कृष्ण कल्पित, आईदानसिंह भाटी, अनिल मिश्रा, बद्रीनारायण, जितेन्द्र श्रीवास्तव, प्रकाश शुक्ल भाग लेंगे। इनके अलावा प्रहलाद जोग्दानंद, हेतु भारद्वाज जयपुर, नंदकिशोर आचार्य, राजाराम भादू, हिम्मत सेठ, प्रेमचंद गांधी, बाबूलाल चावरिया, रत्न कुमार सांभरिया भी संगोष्ठी में शामिल होंगे। *(कासं)*